स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग   दिनांक 11-5-2022

द्वितीय सेमेस्टर

12

ऊधौ, प्रीति न मरन बिचारै।
प्रीति पतंग जरै पावक परि, जरत अंग नहिं टारै॥
प्रीति परेवा उड़त गगन चढ़ि गिरत न आपु सम्हारै।
प्रीति मधुप केतकी-कुसुम बसि कंटक आपु प्रहारै॥
प्रीति जानु जैसैं पय पानी जानि अपनपौ जारै।
प्रीति कुरंग नादरस, लुब्धक तानि तानि सर मारै॥
प्रीति जान जननी सुत-कारन को न अपनपौ हारै?
सूर स्याम सौं प्रीति गोपिन की, कहु कैसैं निरुवारै॥२॥

व्याख्या :- विद्यार्थियों बड़ी खुशी की बात है कि आप लोग सूर के पदों के अंतिम पड़ाव की ओर बढ़ रहे हैं। पदों के बाद एक दो प्रश्नोत्तर भी कर दिया जाएगा।

इस पद में सूरदास जी गोपियों के माध्यम से यह बताने का प्रयास करते हैं कि प्रेम अनन्य होता है। इसमें किसी प्रकार की दुविधा नहीं होती है और न ही जीवन मरण की चिन्ता होती है। उदाहरणों की झड़ी लगाकर सूरदास जी इस बात को सिद्ध करते हैं सबसे पहले वो पतंगे का उदाहरण पेश करते हैं

के कहते हैं कि पतंगा दीपक की लौ से [illegible]
प्रकाश से प्रेम करता है और उसमें समा जा[illegible]
की चिन्ता नहीं करता है, पहले उसके पंख जल[illegible]
हैं, फिर शरीर जलता है और प्राण पखेरू
उड़ जाते हैं पर यह सिलसिला जारी रहता है, [illegible]
के बाद एक पतंगा आता है और जलकर
मर जाता है।

दूसरा उदाहरण [illegible] आकाश पक्षी उड़[illegible]
भी [illegible] कबूतर की जोड़ी की गर्मी है। यह [illegible]
से प्रेम करता है और उड़ता हुआ ऊपर-ऊपर
चढ़ता जाता है परंतु जब उसकी दृष्टि अपनी
कबूतरी पर पड़ती है तो वह उसकी ओर तेजी से
उतरता है जिसमें वह किसी वस्तु से टकराकर
मर भी जाता है परंतु उसका यह कार्य अनवरत
चलता रहता है।

मधुप की चर्चा अगली पंक्ति में करते हैं

कि वह केतकी फूल से प्रेम करता है, उसकी मादक

उससे प्रकाशित होकर (पतंग उसकी ओर) [illegible]
उड़ता है और ज्योति के ऊपर गिर कर जलकर भस्म
हो जाता है, उसका शरीर [illegible] को जलाते परन्तु वह
प्रक्रिया चलती रहती है।

प्रेम की अनन्यता की चर्चा करते हुए सूरदास जी
दूध और पानी की चर्चा करते हैं। पानी दूध से प्रेम
करता है और उससे मिल कर एकाकार हो जाता है।
जब दूध गर्म किया जाता है तब पानी जल जलकर भाप
बनता जाता है, अपने अस्तित्व को समाप्त करता जाता
है पर वह दूध से अलग नहीं होता है, उसका साथ
नहीं छोड़ता है।

हिरण की चर्चा करते हुए सूरदास जी कहते हैं कि
वह संगीत से प्रेम करता है और उस ओर दौड़कर
जाता है, ठीक उसी समय शिकारी तानकर बाण मारता है
और हिरण घायल होकर गिर जाता है और उसके
प्राण पखेरू उड़ जाते हैं। अंतिम उदाहरण माता और पुत्र का दिया गया।

15 THURSDAY MAY

APRIL 14

है। सूरदास जी बताते हैं कि पुत्र से प्रेम के कारण माता पुत्र को जन्म देती है, इस प्रक्रिया में उसका सौंदर्य और यौवन दोनों क्षतिग्रस्त हो जाता है परंतु इस बात का विचार माता कभी नहीं करती है।

इस प्रकार सूरदास जी कहते हैं कि गोपियाँ भी उन्हीं की तरह प्रेम करती हैं और इस प्रक्रिया में वह कुछ भी विचार नहीं करती है। वह तो आनन्द भाव से कृष्ण के प्रेम में निमग्न रहती है और वो ऊँच-नीच, लाभ-हानि नहीं सोचती है।

कुमार रजनीकान्त रंजन

11-5 [illegible]